नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय - राजनीति शास्त्र विभाग
कक्षा - बी. ए. पार्ट - 01 (प्रतिष्ठा) सत्र - 2019-20
पेपर - 01
दिनांक - 21.7.20

टॉपिक - मार्क्सवाद की देन -

मार्क्सवाद की विभिन्न आधारों पर आलोचना की गई है तथा इसके संबंध में परस्पर विरोधी विचार व्यक्त किये गये हैं किंतु यह निर्विवाद सत्य है कि संपूर्ण मानवीय इतिहास में राजनीतिक, ~~और~~ सामाजिक और आर्थिक तौर पर ऐसा मौलिक एवं नूतन विचार किसी ने नहीं दिया जिसने मानव जाति का इतना बड़ा भाग प्रभावित, प्रेरित और अनुप्राणित हुआ जिसके गहरे, दूरगामी और क्रांतिकारी परिणाम हुये। इसने विश्व के एक वृहद भाग में परिवर्तन की ऐसी लकीर खींची जिसका उल्लेख इतिहास की एक अमिट रचना के रूप में है। इसकी विभिन्न देनों को कुछ निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है-

(1.) मार्क्सवाद वैज्ञानिक रूप से प्रतिपादित प्रथम समाजवाद है। यद्यपि मार्क्स के पूर्व भी रॉबर्ट ओवन, एफ. डी. मॉरिस, सेंट साइमन आदि ने समाजवाद को वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक रूप प्रदान करने का प्रयास किया किंतु इसकी पूर्णता मार्क्स ने दी। इसके द्वारा समाजवाद को एक दर्शन और दिशा प्राप्त हुई।

(2.) सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में समाजवाद की एक अन्य देन 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या का सिद्धांत' है। उसी ने सर्वप्रथम समस्त सामाजिक जीवन और संस्थाओं में आर्थिक तत्व के महत्व को स्पष्ट करते हुये सत्य की खोज की है।

(3.) आर्थिक गतिविधियों तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों पर भी उसने सूक्ष्म अध्ययन किया है। उसने ही सर्वप्रथम व्यापार चक्र, अति उत्पादन, और बेरोजगारी के मध्य संबंध स्थापित किया एवं केन्द्रीकरण का दोष बताया।

(4.) पूंजीवाद के संबंध में भी उसका सूक्ष्म विश्लेषण है। उसने सही रूप में प्रतिपादित किया कि यद्यपि पूंजीवाद का परिणाम उत्पादन वृद्धि में होगा किंतु पूंजीवाद विद्यमान स्वरूप में अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकता। 20वीं सदी का पूंजीवाद, 19वीं सदी के पूंजीवाद से बहुत अधिक भिन्न है।

(5.) मार्क्सवाद की सबसे बड़ी देन श्रमिक वर्ग में वर्गीय चेतना और एकता को जन्म देने से है। 'पूंजीवाद का अंत और साम्यवाद का आगमन अवश्यम्भावी है', विश्व के मजदूरों! एक हो जाओ, तुम्हारे पास खोने के लिये केवल जंजीरें हैं और विजय करने के लिये समस्त विश्व पड़ा है - मार्क्स

Scanned with CamScanner

कमियों वाले निरपेक्ष सत्य न होते हुये भी एक ऐसा वाद है जिसने श्रमिक वर्ग में चेतना उत्पन्न करने में अद्वितीय सफलता प्राप्त की है। इसने प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ का निर्माण कर श्रमिक वर्ग को संगठित किया। इसकी विचारधारा मूलतः श्रमिक वर्ग के कल्याण हेतु समर्पित है। इस महान देन को देखते हुये Carew Hunt ने अपनी पुस्तक 'The Theory & Practice of Communism' में लिखा है कि 'ईसाई धर्म के अभ्युदय के बाद मार्क्सवाद सबसे महान आंदोलन था।'

अतः इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि मार्क्सवाद आज के युग का सर्वाधिक लोकप्रिय दर्शन है। यह सैद्धांतिक की अपेक्षा व्यावहारिक अधिक है जिसने सर्वसाधारण की दशा सुधारने के अपने प्रयत्न में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। पोपर जैसे मार्क्सवादी आलोचक भी मार्क्सवाद को हमारे समय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुधारवादी विचारधारा बताते हैं। पूर्व सो. संघ, पूर्वी यूरोप, चीन के साथ विश्व के व्यापक क्षेत्र में इसका व्यावहारिक सफल प्रयोग सिद्ध हुआ है।